

१८३ दश्या पुक जेला क्षम



आ.म.म.म.म. ASMA ARCHIVES	3016	
-----------------------------	------	--

श्रीमशोशासनमा ॥ अथान्तःसंप्रवक्ष्यामिद्यापुरुषलक्षणं ॥ येनः
 विज्ञानमात्रेणात्रिकालज्ञो भवेन्नरा ॥ १ ॥ कतलोद्धरस्थितस्वामिरेनोपायेः
 नलक्षते ॥ प्रवदन्तिसमासेनः यथादृष्टसमाख्येता ॥ शास्त्रकोतेविज्ञनंगत्वाः
 कृत्वादिस्वपृष्टता ॥ निरीक्षतिनिजकायाकंठदेशे समाहितः ॥ शाततश्चा
 कासनिश्चेतः ततः परतशंकरः ॥ ॥ ध्यानं ॥ शुद्धस्फटिकसंकासनानारूप

रा
 १

धरंरुं ॥ ४ ॥ धरामासाभ्यासयोगेननास्ति किंविन्नर्लभां महादेवसमसाक्षाद्
 धराणां पतिर्भवेत् ॥ पादध्वज्येनहेनाथः कर्तारुतात्त्वयंदिभुात्रिकालंतत्वमा
 प्रोतिपरमानंदमेववा ॥ द्वा ३ ॥ ३ ॥ परब्रह्मणेनमः ॥ ३ ॥ परमात्मनेकाला
 त्मनेनमः ॥ १० ॥ जाजप ॥ ॥ तत्स्वरूपंरुद्रमवर्णंजपित्वंमुनिर्मते ॥ धरामासा
 मुक्तिमाप्नोतिसयोगीनात्रसंसया ॥ ७ ॥ पीतव्याधिभयंरक्षेन्नीलहत्पावि

निर्दिशेत्तानानावर्गास्वरूपोस्मिन्नुद्देशे गोजायते महाव्यापापदेगुल्फे च जठ
 रे विनाशवक्रमो भवेत्ताम्रवर्षे राक्षसापि वापि वर्षद्वयेन वा ॥ १॥ दक्षिणाः
 बाहस्तथायं धृतेषामुत्पद्यते क्रवावा मवाहस्तथा भार्या विनाशंति न संशय
 ॥ ७॥ शिरो दक्षिणजं घाभ्यां विनाशं तु विनिर्दिशेत् ॥ असिरो मास मरणं वि
 नाशं घेदिनाष्टकं ॥ ११॥ अष्टमि रक्षन्नासेन छाया नाशेन तत्तद्दशं तीर्थस्मा

नेन दानेनः पतसस्य कृतेन वा ॥ १२॥ जपध्यानेन यत्नेन जायते कालवंचना एषां
 रुद्रसत्तादृश्यां यथागाढात्तपेभ्यः ॥ १३॥ प्रतिविद्यमि देव्यं निरिक्षितसुदृष्टि
 लोचनद्वयं ज्ञानार्थं पठितं शास्त्रं ज्ञानं कृतिविनाशना ॥ १४॥ फलार्थं पृथितं प
 थितं फलं पुष्पं विनाशना ॥ शोको नाशपतिप्राज्ञो सोको नाशपतिधृतिः ॥ पा
 सोको नाशपतिवर्मनास्ति शोकसमोरिषा ॥ इतीति पारिवारणोक्तं केशो

सवीकोपम ॥ ६ ॥ छत्रवृक्षगौरवपाइवस्त अनुपा ॥ छायापुरुषविचारा ॥
 ॥ वैवमासेपिरुशरिण्डमावेशाघमासके ॥ ज्येष्ठमासेतुरुशरिणसावित्र्या
 घाठमेववा ॥ १ ॥ चावरोवैसवीछायालक्ष्मीभाइपदेतथा ॥ अश्विनेगरामा
 तावसिद्धछायावकार्तिके ॥ शमार्गशीर्षसूर्यछायापौषवह्निस्तथैववा ॥
 माघमासेचंद्रछायाफाल्गुरोसिद्धसाधिका ॥ श्रापान्तकालेमर्त्यलोकेम

रा
 ३

च्याहेचपतालके ॥ संध्याकालेसुर्गलोकेछायालोकत्रयोक्रवां ॥ ४ ॥
 अथवैवमासादि ॥ करलोपदिषतोअल्पकालवर्तते ॥ शिरलोपदिषतोसि
 द्धमिलैद्वयकदेषेनोमहाकष्टपडे ॥ पा ॥ एकपावडपरदिषतोछठेदिनअ
 जसमिलै ॥ जटावाचैडुरिहोयेतोछठेमहिनाकष्टहोये ॥ ६ ॥ जलपिबंतदे
 षतोमहाडुर्भिक्षहोये ॥ ॥ अथवेशाघा ॥ माघनदेषतोतत्कालमरणा

होयो ॥ ७ ॥ शिरनहि होइ अति न गाला करति देषे तो तिसरा वार मरन होइ ॥
 वडि वडि आघा देषे तो तिसरे दिन मरणा होइ ॥ दात देषे तो चारौ दिन मर
 होइ ॥ जो वार सों वार देषे तो अति धन पावै ॥ मूर्छा तावति देषे तो अर्ध रात्र क
 टक पड़े ॥ ॥ अथ ज्येष्ठ कंठि घडग देषे तो नइ पाता साहि होइ ॥ मुठि वधि दे
 षे तो प्रजा कष्ट होयो ॥ १० ॥ जो छाया को सब सुने तो दिन मे धुली वर से ॥ माः

रास
 ४

धै कलस होइ उग्र हरिया लि देषे तो आइ वलाई द कै होइ पा ॥ ॥ अथा घा
 टा जो कहुला क कति देषे तो लाल पाणि होये पीडा होइ ॥ दांत डरि पड़े तो
 तत्काल पीडा पड़े ॥ ११ ॥ एक पद उरि देषे तो दिन अपे मरणा होइ ॥ दो जर
 तन देषे तो समर्थ धाता मरे ॥ १२ ॥ सहस्रति देषे पाछे रुदति देषे तो गुरु कष्ट प
 डे ॥ शिर वा डभी देषे छठ मास कष्ट होयो ॥ १३ ॥ जो हा मे कुल होहि वध रति

देवैतो मंगल होश ॥ हाया काली देवैतो इषिभला होश ॥ पा ॥ हाय न देवैतो
 अल्प मृत्यु होश ॥ हाय मै दीप देवैतो षट्मास मै मृत्यु होये ॥ ६ ॥ ॥ अथ
 वरा ॥ ध्यान किये सैन देवैतो मरणा होश ॥ सिर के बाल सेति देवैतो पंचमास मै
 मरणा होये ॥ ७ ॥ हाय सैक परास मै तिनाला देवैतो देश मै विघ्न होश ॥ जो प
 गम सलती देवैतो लुपीत होश ॥ जो पाव सेत होश ॥ सौ होश तो घट की आई

वलाई ना से ॥ जौ कृष्ण पग देशे तो रा दिन मृत्यु होश ॥ जा के र मध्यवक्र पोरै तो
 षमास पलय काल होश ॥ जो हाय मै धनुष वतौ देशे तो कुप मै काजल ना से
 ॥ १ ॥ भाइ फला ॥ अर्ध शरिर देस तो प्रहर १ मृत्यु होश ॥ जो एक हात मै ध
 नुष देशे तो आध ओलिन समय होश ॥ जो हाया उपर मोरि बुंदर पडती दे
 शे तो समय अष्ट होश ॥ मुनि की हिर पडती देवैतो महा काल घडे ॥ जौ हा

यूपहल्लमवतीदेवैतोसिधसुमदाहो॥ ॥आखिनफलं॥नीलवर्णदे
शैतोदीर्घरागहाइ॥जोपीतवर्णदेवैतोमृत्पुहो॥गाविनादेवैतोपमासमृ
त्पुहो॥आनकियानदेवैतोघरी३पाठैफेरिदेविजेफेरिभिन्नदेवैतोतिस
रदिनपीडापरै॥औरदेवैतोतिसरदिनकष्टपडे॥जीवैजोतेजवतहोयेतो
कोइतेजवततपसीमिलै॥ ॥कार्तिकफलं॥जोपावमैकमुखकिया

देवैतोमुखकैहीआगअकैपुहोयतोदिवसइमैमृत्पुहो॥छायाउप
रखइमाकिरणदेवैतोसुधागगनवठादेवैतोमेघनासे॥सूर्यउडचलता
देवैतोमासामैघवहो॥छायापरनदिनाववक्रवालताहोयतोह्रवभं
गहो॥ ॥मार्गशीर्षफलं॥जोपगदिशैघरनदीसैसर्पसैभेठहो॥जो
छायाउपरसुनिवक्रफिरतोदिशैवर्षशकालपडे॥जोछायाउपरपानि

काष्ठादापडतादिशैतो अरधतिनदिशैतो पडहोयेतो हवभंगहोइमास
इजो पूर्वको जातिदिशैतो मासपमे मरणा होई ॥ ॥ पोषफलं ॥ जौ उप
रीवा दल देषैतो पाणि वर्स तो आकस मे देषैतो भूमि मुसुष होई ॥ छाया
उपर अग्नि वलति दिशैतो अग्नि प्रज्वाल होई ॥ छाया उपर पवन होयेतो प
वन प्रलय होई ॥ ॥ माघफलं ॥ छाया उपर विजो लि देषैतो मरणा होई ॥

राम
७

छाया उपर नक्षत्र दुष्ट तो फेर उलट जाति तो तत्काल मृत्यु होई ॥ ॥ फा
ग्राफलं ॥ छाया उपर सूर्य वंड जाता पूर्व को देषैतो मास रमे मृत्यु होई ॥
उपर कौ जाति देषैतो हिंदु तुलक एक मेक होई ॥ पश्चिम को जाता देषैतो म
का हिंदु राजा होई दक्षिण जाता देषैतो महा प्रलय होय ॥ जौ छाया सौ पि
ना मे देषैतो दिन द्यपति सहि मेरे ॥ ॥ इति छाया प्रलक्षणं ॥ ॥

धारामुत्रपरिहृते उत्थाय अरुणोदय ॥ दक्षिणावर्त्तते धारा वहते वसुभद्र
 वा ॥ १ ॥ वामवर्त्तश्च कलहफ्रितं फाटितं तस्या ॥ सद्योत्तमधुरंगत्वास्तत्पंक्तं
 वदाम्यहं ॥ २ ॥ अर्द्धधारा गते यत्र उर्द्धधारा वहति वा ॥ तदामृत्युविजानीत्याप
 क्षमेकं भवेन्नरा ॥ ३ ॥ अर्द्धधारा भवेयांति क्षयरोग भवेत्क्रवा ॥ पीतं च वहते
 धारामहोरोग भविष्यति ॥ ४ ॥ रुक्मधारा भवेयांति रक्तधारा रजो भवेत् ॥ स्या
 मधारा क्षरो मृत्यु कालेना च व बो यथा ॥ ५ ॥ इति मुञ्च धारा ॥ ॥